पाठ -21

संस्मरण

मेरा गाँव मिल क्यों नहीं रहा?

● रामनारायण उपाध्याय

आइए, सीखें : संस्मरण विधा का परिचय। ग्रामीण रहन-सहन व संस्कृति की जानकारी । ♦ क्रिया के प्रेरणार्थक रूप का ज्ञान।

जब भी मैं गाँव पहुँचता हूँ, मेरा गाँव मुझे मिल नहीं पाता।

वही गलियाँ वही चौराहे, नदी का वही घाट, वही बाट। लेकिन मेरे अपने गाँव का कहीं पता नहीं चलता। गाँव की चौपाल, चौसर की तरह खुली पड़ी है, लेकिन उस पर खेलने वाले मोहरे पहले ही पिट चुके हैं। कुछ हैं जो चीरा संभाल कर बैठे हैं, लेकिन उनमें अपने घर की दहलीज को भी लाँघने की शक्ति नहीं।

वह कुण्डी का पानी और कण्डे की आग परस्पर लड़कर बुझ चुकी, जिसके सहारे चिलम के दौर के साथ बातों के छोर को भी भोर से मिला दिया जाता था।

गली के मोड़ पर खड़ा बूढ़ा नीम कब से बाट जोह रहा है कि कोई आए और उसकी भुजाओं से झूला बाँधकर उसे भी आसमान तक ऊँचा उठने का मौका दे। लेकिन शरारती हवा का एक झोंका उसके सिर की पीली पत्तियों को पगड़ी की तरह उड़ा ले जाता है। गाँव के खलिहान से लगी झोपड़ी का वह जन्मान्ध बूढ़ा भी अब नहीं रहा, जो मेरे पाँव की आवाज पहचान कर पूछ उठता था, ''कौन दादा हैं क्या? शहर से कब आए हैं?'' मैं उससे पूछता ''बाबा, तुमने कैसे पहचाना? '' भरे गले से वह कहता, ''क्या मैं अपनी धरती से जुड़े पाँव की आवाज को नहीं पहचानता! दादा जिनके पाँव में जूते नहीं होते, उनकी नंगी पगथलियों की आवाज जुदा होती है। जिनके पाँव में फटे जूते होते हैं, उनके दर्द से फटी धरती की छाती की आवाज जुदा होती है और जो अपने नालदार जूतों से धरती को रौंदते हुए चलते हैं, उनकी आवाज जुदा होती है। फिर आप तो इस धरती के आदमी हैं। कितनी ही

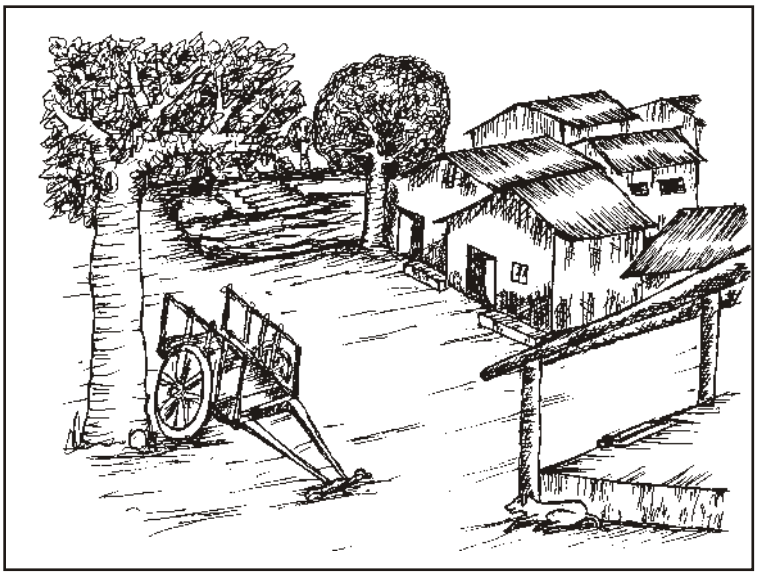

शिक्षण संकेत -

♦ बच्चों को संस्मरण विधा की जानकारी दें। ♦ ग्रामीण संस्कृति व परिवेश की जानकारी दें। ♦ बढ़ते औद्योगिकीकरण व शहरीकरण पर चर्चा करें। ♦ कठिन शब्दों के अर्थ छात्रों के सहयोग से बताएँ। ♦ शब्दों के शुद्ध उच्चारण व लेखन पर ध्यान दें।

दूर क्यों न चले जाएँ, आपके पाँवों की आवाज को मैं अपने दिल की धड़कन में सुन लिया करता हूँ। ''

और फिर बकरी के दूध से बनी चाय के साथ जब वह अपनी तार-तार पगड़ी के पेंच से बँधे दस पैसे निकाल दक्षिणा में देता , तो मैं कुबेर के धन पाने जैसा समृद्ध हो उठता था।

नदी का वह पानी भी अब सूख चुका, जिसके किनारे बैठकर अगर एक कंकरी भी फेंको तो तरंगे उठती चली जाती थीं। अब तो नदी का चेहरा उभरे हुए दर्द की तरह रेत बन चुका है।

अब गाँव से प्रश्नों के तीर की तरह गीत के बोल नहीं उठते, ''निर्मल चाँदनी रात है, तारे का उदय कब होगा! तारे का उदय तो पिछली रात में होगा, जब पड़ोसिन जाग जाएगी और दही बिलौने की आवाज के साथ चक्की का स्वर गूँजेगा।''

गाँव के जिस बाड़े में रथ-सी सजी गाड़ियाँ खड़ी रहती थीं, वहीं अब ठलुओं के साथ ठेले खड़े नजर आते हैं। गाँव का गोरस बजाय चीखते बच्चों के, होटल वालों की भूख बुझाने में लगा है। गाँव की अमराई में आम अब भी आते हैं, लेकिन उन पर अब कोयलें नहीं कूकतीं, वर्न कौए बैठकर इस बात की चौकसी करते हैं कि कहीं 'आम' को देखकर 'आम' आदमी के मुँह में पानी तो नहीं आ रहा है! महुआ अब भी टपकता है, लेकिन गाँव की गोरियों के इशारे पर नहीं, वरन् ठेकेदार की ठोकर पर अब वह आँसू की तरह गलने को बाध्य है। आखिर ये कौन लोग हैं, जो गाँव की खेती-योग्य जमीन पर गिट्टी से नींव भरकर, दफ्तर बना, बाँटे गए ऋण से खेतों के लहलहाने का स्वप्न देख रहे हैं? आखिर ये कौन लोग हैं, जो तेलघानी में बजाय तिल्ली या मूँगफली डालने के, अनुदान के नोट डालकर कागज में से तेल निकलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं? आखिर ये कौन लोग हैं, जो गाँव वालों के पाँवों के नीचे की एकता की दरी को खींचकर उनके सर्वांगीण विकास का दावा कर रहे हैं?

आखिर ये कौन लोग हैं, जो गाँव के आदमी को अपनी झोंपड़ी से बेदखल कर वहाँ अपना दफ्तर-क्वार्टर, होटल या दुकानों का जाल बिछाकर मछली के फंसने का इंतजार कर रहे हैं?

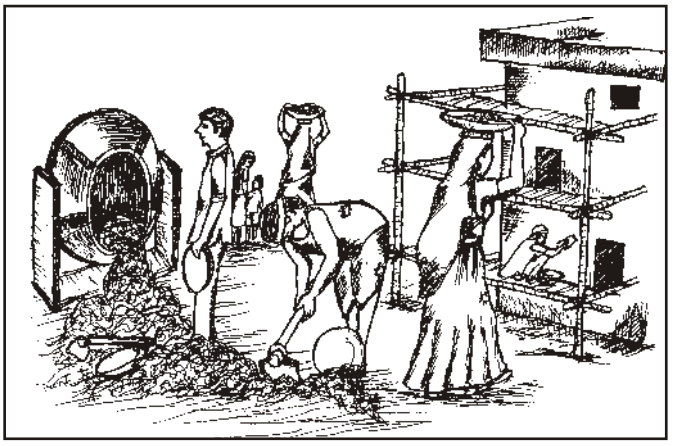

लगता है, उठे हुए बाजार की तरह मेरे गाँव का ठाठ उठ चुका है। कभी देखा है उठे हुए बाजार का सन्नाटा, जहाँ नमकीन, सेंव और गुड़ी पट्टी से चिपचिपाते कागज के जूठे पन्ने हवा में उड़ते फिरते हैं। जहाँ पान की पीक तथा मूंगफली के छिलकों से, वहाँ कभी आदमियों के होने का आभास होता है।

अब तो सारा ठाठ उठ चुका है। और मैं चिल्ला-चिल्लाकर ढूंढ रहा हूँ, लेकिन मेरा गाँव कहीं नहीं मिल पा रहा है।

नए शब्द

बाट = रास्ता। **मोहरे** = गोटियाँ। **चौसर** = चौपड़। **चीरा संभाल कर** = लहरदार रंगीन कपड़े की पगड़ी को संभाल कर। **कुण्डी** = कूँडी पत्थर की कटोरी, चीनी मिट्टी की कटोरी। **छोर** = सिरा। **भोर** = सबेरा। **जन्मान्ध** = जन्म से अंधा, नेत्रहीन। **धरती से जुड़े** = मातृभूमि से संबंध रखने वाले। **पगथलियों** = पैर के तलवों। **जुदा** = अलग। **तार-तार** = चिथड़े - चिथड़े। **पेच** = पगड़ी का फेरा, घुमाव-फिराव। **अमराई** = आम का बाग। **मुँह में पानी आना** = ललचाना। **सर्वांगीण** = सभी क्षेत्रों से संबंधित। **बेदखल** = कब्जा रहित, अधिकार से वंचित।

अनुभव विस्तार

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(क) सही जोड़ी बनाइए -

(अ) गाँव की चौपाल - गली के मोड़ पर था

(ब) बूढ़ा नीम - चौसर की तरह थी

(स) शरारती हवा - अब सूख चुका था

(द) नदी का पानी - पीली पत्तियों को उड़ा देती है

(ख) दिए गए विकल्पों से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

(ऋण, चेहरा, दर्द, भूख,गोरस, आम, पानी, स्वप्न,)

(अ) ये कौन लोग हैं जो बाँटे गए.....से खेतों के लहलहाने का .....देख रहे हैं?

(ब) अब तो नदी का ..... उभरे हुए ..... की तरह रेत बन चुका है।

(स) गाँव का .....बजाय चीखते बच्चों के, होटल वालों की.....बुझाने में लगा है।

(द) आम को देखकर..... आदमी के मुँह में ..... तो नहीं आ रहा है।

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(अ) गाँव की गली के मोड़ पर कौन बाट जोह रहा है?

(ब) पीली पत्तियों की तुलना किससे की गई है?

(स) 'गाँव में जहाँ रथ सी सजी गाड़ियाँ खड़ी रहती थीं '- वहाँ अब क्या खड़े नजर आते हैं?

(द) तेलघानी में तिल्ली या मूँगफली के स्थान पर अब क्या डाला जा रहा है?

(ई) लेखक क्या ढूँढ रहा है?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) लेखक की बूढ़े बाबा से क्या बात होती थी?

(ब) लेखक कुबेर सा समृद्ध कब हो उठता था?

(स) गाँव में अब नदी की क्या स्थिति हो गई है?

(द) गाँव की अमराई के स्वरूप में क्या परिवर्तन हुआ है? स्पष्ट करें।.

(ई) 'वर्तमान में गाँव का ठाठ उठ चुका है'– कैसे ? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात–

1. बोलिए और लिखिए –

चौपाल, चौसर, जन्मान्ध, पगथलियों, खलिहान, अमराई, तेलघानी, समृद्ध, सर्वांगीण,अनुदान, क्वार्टर।

2. निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए –

पड़ोसीन, कूम्हार, दक्षीणा, चौरहा, अवाज, तिली, मूँगफलि, दफतर, चिपचपाते

3. नीचे लिखे शब्दों से विशेषण शब्द अलग करके लिखिए–

(अ) बूढ़ा नीम –

(ब) फटे जूते –

(स) शरारती हवा –

(द) पीली पत्तियाँ–

(इ) नालदार जूते –

4. नीचे लिखे शब्दों के दो– दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(अ) घर –

(ब) धरती –

(स) धन –

(द) नदी –

■ **इसे भी समझिए –**

माँ ने अपने बच्चे को पढ़ाया और शिक्षक से भी पढ़वाया। फलस्वरूप वह कक्षा में प्रथम आया। कक्षा में जब शिक्षक प्रश्नोत्तर लिखवाते थे, तब बच्चा लिखने के साथ–साथ याद भी करता जाता था। घर आकर वह पढ़ा हुआ पाठ माँ को सुनाता था।

रेखांकित शब्द 'पढ़ाया' 'लिखवाते' तथा 'सुनाता' शब्दों द्वारा कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसलिए ये क्रिया के प्रेरणार्थक रूप हैं।

5. **उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए क्रिया शब्दों को प्रेरणार्थक क्रिया में बदलिए-**

क्रिया	**प्रेरणार्थक**	
धोना	**धुलाना**	**धुलवाना**
चलना	.....	.....
माँगना	.....	.....
पीना	.....	.....
हँसना	.....	.....
डरना	.....	.....

अब करने की बारी

- अपने निकट के गाँव में जाकर ग्रामवासियों से चर्चा कीजिए और उनके साक्षरता ज्ञान एवं स्वास्थ्य सुधार हेतु प्रयत्न कीजिए।